ॐ श्री सत्नाम साक्षी

मर्यादामूर्ति सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके
जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

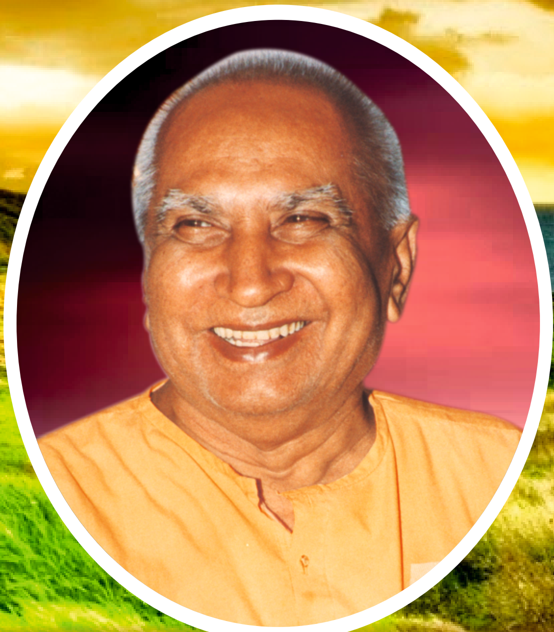

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

मर्यादामूर्ति सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

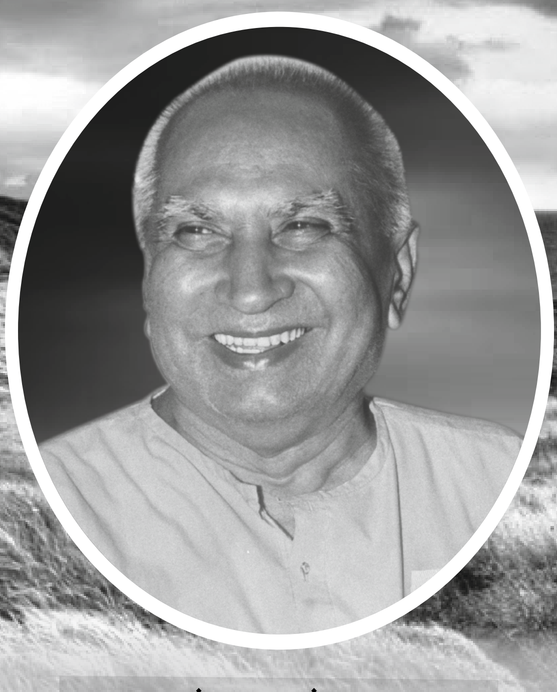

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ सत्नाम साक्षी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की गुरुगद्दी के चतुर्थ पीठाधीश्वर

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म – सिन्धी तारीख – १३ वैशाख – पूर्णिमा – ३० मार्च १९३० (रविवार) के दिन – सिन्ध के 'घुन्डन' गाँव में हुआ था ! उनके पिताश्री का नाम 'श्री हीरानंद जी' और माता श्री का नाम 'मोतिलबाई' था !

स्वामी जी ने नाम- दान की दीक्षा **'सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज'** से प्राप्त की थी !

स्वामी जी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के 'चतुर्थ पीठाधीश्वर' थे! 'महाराज श्री' ने १९९२ से २००० तक (८ वर्ष) मण्डल के सेवा कार्यों को निष्ठा पूर्वक संभाला और श्री गुरुदेव की यश कीर्ति को चहुँ ओर फैलाया !

स्वामी जी ने अनेक ग्रंथों की रचना की ! जिसमे मुख्य – श्री अमरापुर दर्शन, नित्य नियम प्रार्थना एवं सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जीवन चरितामृत ! इसी प्रकार स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ व भजनों की भी रचना की !

स्वामी जी की 'गुरु के प्रति' अगाध निष्ठा थी ! वे 'महर्षि

सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज' की खूब तन-मन से सेवा किया करते थे ! श्री अमरापुर दरबार में सतगुरु सर्वानन्द जी के कमरे के पास ही एक छोटा सा कमरा बना हुआ था ! वहीं निवास किया करते थे ! जहाँ आज उनका '**चित्र प्रर्दशनी स्थल**' बना हुआ है !

स्वामी जी प्रातः ४ बजे से पहले उठ जाया करते थे ! फिर 'सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज' की सेवा में दातुन, तोलिया, गर्म पानी आदि आवश्यक वस्तुएं पहले से ही तैयार करके रख देते थे ! सेवा कैसे करनी चाहिए ? ये इन महापुरुषों से सीखना चाहिए ! स्वामी जी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे !

स्वामी जी आदर्श व मर्यादा की साक्षात मूर्ति थे ! समय की पाबंदी का विशेष ध्यान रखते थे ! उनका जीवन सरल व सादा था! वे सादे वस्त्र धारण करते व भोजन भी सादा ही खाते थे !

स्वामी जी सदैव '**आचार्य उपासना**' को विशेष महत्व देते थे ! कहते थे- जैसे एक पेड़ की '**जड**' **(मूल)** को पानी देने से सारी टहनियाँ हरी-भरी हो जाती है ! वैसे ही 'आचार्य श्री' की भक्ति करने से सबकी पूजा हो जातीं हैं ! ये ही सबसे बड़ी गुरु भक्ति हैं ! अतः "**आचार्य श्री सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज**" की ही भक्ति-उपासना सभी को करनी चाहिए !

स्वामी जी आचार्य श्री का महामन्त्र सतनाम साक्षी जपने पर विशेष जोर देते थे! गुरु मंत्र ही सर्वश्रेष्ठ है ! भक्तों को '**गुरु मंत्र**' देते समय आचार्य श्री की प्रतिमा देते थे और कहते थे - तुम्हें इन्हीं का ही ध्यान- चिंतन करना है !

स्वामी जी की श्री गुरु दरबार के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी ! गुरु दरबार की सेवा स्वयं करते थे और सभी से करवाते भी थे! पदासीन होने पर भी अपने आप को हमेशा '**गुरु दर**' का सेवादारी मानते थे !

स्वामी जी सत्संग प्रारम्भ करने से पहले ये प्रार्थना- सद्गुरु सर्वानन्द हमें- अभय दान दीजिए... और फिर... जय- जय- जय टेऊँराम स्वामी- कृपा करो प्रभु अंतर्यामी...से पूर्ण किया करते थे !

स्वामी जी को रामायण, गीता, भागवत, उपनिषद, वेद आदि अनेक शास्त्रों का भरपूर ज्ञान था ! सभी को शास्त्र पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे !

स्वामी जी मे सादगी, समय की पाबन्दी, मर्यादा, निडरता, निर्भीकता, सेवाभाव, गुरुभक्ति, संतो से स्नेहभाव, गुरु समर्पण और 'आचार्य श्री' के प्रति निष्ठा आदि अनेक गुण विद्यमान थे !

स्वामी जी अक्सर सिंधी बोली को बचाने के लिये कहते थे ! सिंधी बोली हमारी '**मातृ भाषा**' है ! घर मे सभी से सिंधी में बात करो ! अपने धर्म व सिंधी बोली से प्यार करो ! उसकी रक्षा करो ! तभी हमारा सनातन धर्म व सिंधी बोली बचेगी !

स्वामी जी सन- १९९६ में कुछ संतो को साथ लेकर सिन्ध यात्रा करने गए थे ! वहां से '**सद्गुरु टेऊँराम बाबा जी**' की 'पावन जन्म स्थली- खंडू गांव' एवं 'श्री अमरापुर दरबार- टण्डा आदम' की 'पवित्र रज' साथ लाये थे ! उस '**पवित्र रज**' को

वर्तमान श्री अमरापुर स्थान- जयपुर में दर्शनों के लिए रखा गया है !

स्वामी जी सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा के हेतु **'जनेऊँ व चोटी'** धारण करने के लिये कहते थे ! इसी के साथ कहते थे कि हमारे सिंधी समुदाय के इष्टदेव **'भगवान श्री झूलेलाल जी'** है ! हमें उनकी पूजा- अर्चना छोड़नी नही चाहिए ! चाहे हम किसी भी पंथ या सम्प्रदाय को क्यों न मानते हो !

स्वामी जी **'पावन चैत्र मेले'** के शुभ अवसर पर सदैव कहते थे- मेले के मालिक - **आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** है ! हम तो उनके दास व सेवक है !

स्वामी जी २६ अगस्त २००० शनिवार- एकादशी के दिन इस पंचभौतिक देह का त्याग कर ब्रह्म की ज्योत में लीन हो गए ! **'महाराज श्री'** के पार्थिव शरीर को तीर्थ नगरी हरिद्वार में **'जल समाधि'** प्रदान की गई !

ऐसे मर्यादामूर्ति सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के पावन 'श्री चरणों' मे शत-शत नमन... कोटि-कोटि वन्दन...

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

ब्रह्मनेष्ठी, ब्रह्मश्रोत्री, अनन्तश्री आचार्य-प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने **'प्रेम प्रकाश पंथ'** का जो दिव्य पौधा लगाया था, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उसे अपनी अटल गुरु-भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से सींच कर बड़ा किया ! उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने उसे अपने दिव्य गुणों शान्ति और प्रकाश से पल्लवित कर एक विशाल वृक्ष का रूप दिया और सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने अपनी सेवा, सादगी, त्याग और तपस्या से पल्लवित पुष्पित कर उसे एक विशाल वट-वृक्ष बनाया और उन्होंने सनातन धर्म की पताका को देश-दुनिया में लहराया और श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक सौरभ विश्व के कोने-कोने में फैला दिया ! **मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज 'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल'** की परम पावन गुरु-गाद्दी पर पीठासीन होने वाले चौथे महापुरुष थे !

आइये विश्व की इस महान् विभूति के जीवन चरित्र पर एक विहंगम दृष्टि डालें !

संक्षिप्त जीवन चरित्र -

आपका जन्म अथवा लोक कल्याण की दृष्टि से इस धरा-धाम पर अवतरण ३० मार्च १९३० को सिंध प्रदेश (जो कि अब पाकिस्तान में है) के एक छोटे से ग्राम **'घुण्डन'** में हुआ था ! आपकी माता श्रीमती मोतिल बाई एक धार्मिक एवं संतसेवी महिला थीं ! इसी प्रकार उनके

पिता श्री हीरानन्द जी भी आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाले एक संतसेवी पुरुष थे! उनकी माता श्रीमती मोतिल बाई रिश्ते में सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की बहिन थीं, अतः यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि उन्हें धार्मिक संस्कार और आध्यात्मिक प्रवृत्ति माँ के दूध के साथ मिली थी ! एक तो वंश परम्परा और जन्म संस्कार से, दूसरे उनके चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण था ! बचपन से ही वे अपने माता-पिता के साथ **'आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** द्वारा स्थापित श्री अमरापुर दरबार में संतों महात्माओं के दर्शन करने और उनके अमृतमयी प्रवचन सुनने हेतु जाया करते थे ! इसका प्रभाव उनके कोमल किन्तु जिज्ञासु मन पर गहरा पड़ा ! स्कूली शिक्षा तो मेट्रिक तक की थी परन्तु शास्त्रों का स्वाध्याय तो उन्होंने गहन और सूक्ष्म किया था !

भारत के कष्टकारी विभाजन के पश्चात् वे भी अपने माता-पिता के कार्यों में उनकी सहायता किया करते थे और सादा सरल जीवन व्यतीत करते थे ! एक बार वे अजमेर आये जहाँ पर उन्होंने सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज और अन्य संतों के प्रवचन सुने ! उनके मन पर पर इसका आत्मिक प्रभाव हुआ और उन्होंने सांसारिक झमेलों से दूर रहकर, आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने की ठान ली ! सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जी ने उन्हें **'श्री प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार'** में रहकर सेवा करने की आज्ञा प्रदान की ! उन्होंने बड़ी ही निष्ठा और लगन से वहाँ पर हर प्रकार की सेवा की ! वे बाग-बगीचों के रख-रखाव, बिजली-पानी, स्वच्छता इत्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखते थे ! उनकी सेवा से प्रसन्न होकर सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उन्हें श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में अपने निजी सहायक की सेवा हेतु रखा ! यहाँ पर ही आपने **'सद्‌गुरु स्वामी**

सर्वानन्द जी महाराज' से **'नामदान'** की दीक्षा ली और दत्तचित्त होकर गुरुसेवा में एकाग्र भाव से लग गये !

गुरु सेवा और अनुकरणीय गुरुभक्ति –

वे अपने गुरुदेव की परछाई होकर रह गये ! अपने अहम् को छोड़कर गुरुसेवा में जुट गये ! वे अपने गुरुदेव से पहले उठकर उनके दातुन मंजन इत्यादि की व्यवस्था करते ! अपने गुरुदेव के लिए उनके स्वास्थ्यानुकूल भोजन ले आते, उन्हें भोजन कराने के पश्चात् उसी थाली में वे भी भोजन करते, उनके वस्त्रों औषधि इत्यादि की भी देखभाल करते और सत्संग के समय हारमोनियम पर उनके साथ संगत भी करते ! सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने जब आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सद्ग्रन्थों का संकलन किया तो उनकी छपाई की सेवा भी स्वामी जी ही देखते थे ! वे स्वयं भी एक अच्छे लेखक और कवि थे। उन्होंने सत्शास्त्रों का गहराई से अध्ययन किया और वे सदैव सभी को वेद शास्त्रों, श्रीमद् भागवत, गीता, योग वशिष्ठ और श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन करने को कहते थे ! उन्होंने सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ देश-विदेश में सनातन धर्म का प्रचार और प्रसार किया और आचार्यश्री के वैदान्तिक विचारों को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाया !

आचार्यश्री के प्रति उनकी अटल श्रद्धा,
अगाध विश्वास और अडिग भक्ति–

जिस प्रकार अर्जुन को स्वयंवर के समय केवल मछली की आँख ही दिखायी देती थी और वे आसपास के वातावरण को भूल चुके थे, ठीक उसी प्रकार **'स्वामी हरिदासराम जी महाराज'** को भी केवल **'आचार्य श्री'** ही यत्र तत्र सर्वत्र दिखाई देते थे ! वे कहा करते थे कि आचार्यश्री पूजा अर्चना करने पर सब संतों की पूजा अर्चन स्वतः हो जाया करती है ! उन्हें आचार्यश्री साक्षात् ब्रह्म स्वरूप दिखलाई पड़ते

थे ! उन्होंने आचार्यश्री के नाम का कितना सुन्दर और सूक्ष्म वर्णन किया है-

'टे' त्रिगुण स्वरूपाय, 'ऊँ' निर्गुण निरूपणे।
टेऊँ ब्रह्माधिनाय, नमस्तस्यै नमो नमः।।

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् उन्हें सन् १९९२ में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष के पद पर पीठासीन किया गया ! वे व्यास पटल पर बैठने और प्रवचन के पहले गुरुदेव एवं आचार्य श्री की महिमा गाया करते थे !

सद्गुरु सर्वानन्द हमें अभय दान दीजिये .... और फिर पूर्णाहुति भी **'जय-जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी' 'तुम ही सत्गुरु, तुम पितु माता, तुम ही हरिहर तुम ही विधाता'** से किया करते थे !

कहते हैं फिर गुरु-गाद्दी पर आसीन होने पश्चात् उनमें भी वैसा ही ओज और वैसा ही तेज, वैसा ही आभा- मण्डल और वाणी में भी वैसी ही श्रेष्ठता और माधुर्य आ गया था जैसा कि श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य श्री में था ! न केवल इतना ही उनके पूर्व पीठासीन हुए सद्गुरुओं के दिव्य गुणों का भी उनके व्यक्तित्व में समावेश हो गया था। किसी ने उनकी महिमा में ठीक ही कहा है :-

आचार्यश्री के अनन्य उपासक, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज।
सर्वानन्द सम सर्व सुखदायक, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज।
शान्तिप्रकाश सम सहज स्नेही, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज।
विद्या विनय की मंगलमूर्ति, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज।

वे त्याग और तपस्या, सेवा और सादगी, विद्या और विनय की अद्भुत मूर्ति थे ! वे व्यवहार और परमार्थ के विशेषज्ञ थे ! उनके पास देश-विदेश से बच्चों, बूढ़ों, महिलाओं और पुरुषों के अनेक पत्र आते थे और अनुशासनप्रिय स्वामी जी सभी पत्रों के उत्तर समयानुसार देकर

उनके व्यवहारिक और पारमार्थिक जीवन का मार्ग प्रशस्त किया करते थे कि वे अपने आपको **'शक्तिस्वरूपा'** समझें और कभी हीन भावना से पीड़ित न हों ! वे प्रायः कहा करते थे- 'शक्ति के बिना 'शिव', 'शिव' न रहकर 'शव' बन जाता है।

वे सिंधी भाई बहनों से कहा करते थे कि अपने बच्चों को **सिंधी भाषा** और **सिंधी सभ्यता** से अवगत कराओ, उन्हें सिंध के वीरों और सपूतों संतों और महात्माओं की झलक अवश्य दिखलाओ ! मेले के दिनों में वे एक सजग प्रहरी और कुशल व्यवस्थापक की भाँति दिन-रात कार्य करते रहते थे ! उनमें ब्रह्मज्ञानी महात्माओं के सद्गुण विद्यमान थे, जैसे कि आचार्यश्री द्वारा रचित ब्रह्मदर्शनी में दर्शाया गया है-

ब्रह्मज्ञान की करहैं चर्चा, ब्रह्मभाव से करहैं अर्चा।
ब्रह्मभाव का धरहैं ध्याना, ब्रह्मभाव से कथे सुज्ञाना।
ब्रह्मभाव से पुस्तक पढ़ता, ब्रह्मभाव से कर्तव्य करता।
ब्रह्मभाव से भोजन खावे, ब्रह्मभाव से सभ अपनावे।
जाके मन नहीं भेद निशानी, कहे टेऊँ सो ब्रह्मज्ञानी।।

आध्यात्मिक जगत् की ऐसी विशिष्ट विभूति, संत शिरोमणि पूज्य सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज २६ अगस्त सन् २००० (शनिवार) को ब्रह्मलीन हो गये। ऐसे दिव्य पुरुष पंच भौतिक शरीर को त्यागकर ब्रह्मलीन होने के पश्चात् विश्व-व्यापक हो जाते हैं। उनकी अमृतमयी वाणी अमर है, उनका सहज स्नेह, अहेतुकी कृपा, उनका सद्आचरण, उनके पावन संस्मरण अमर हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा-स्त्रोत रहेंगे ! उनके पावन श्रीचरणों में सहस्त्रों बार नमन-वन्दन !

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

आचार्यों उपासना

ध्यान मूल गुरु मूर्ती, पूजा मूल गुरु पाद।
मंत्र मूल गुरु वचन है, मुक्ति गुरु प्रसाद।।

स्वामी जी का जीवन गहरे समुद्र के समान था ! अनमोल रत्नों के भांति उनके गुण और उनकी गूढ़ वाणी अद्भुत थी !

मर्यादामूर्ति सतगुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज '**हरि की साक्षात**' मूरत थे ! यथा नाम तथा गुण ! हरि का दास ! उनके गुणों का वर्णन नही किया जा सकता है !

युगपुरुष आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रति उनकी पूर्ण निष्ठा और '**आचार्यों उपासना**' स्वामी जी का मूल मन्त्र था ! अपने सत्संग के द्वारा 'आचार्य श्री' के प्रति भक्ति और श्रद्धा का बीज स्वामी जी ने प्रेमियों के मन में बोया !

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर स्वामी जी सदैव अपने प्रवचनों में कहते थे- '**आचार्य श्री**' का सम्मान और उनके द्वारा दिए गए मन्त्र '**सतनाम साक्षी**' का जप व मंत्र का सन्मान प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य है ! आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ही हम सब प्रेम प्रकाशियों के आधार स्तम्भ हैं ! मूल जड़ है ! उनकी पूजा हमें विशेष रूप से करनी चाहिए ! हमने उनकी पूजा कर ली तो समझो श्री प्रेम प्रकाश मंडल के सभी संतो की पूजा- सेवा कर

ली ! हमें जड़ (मूल) को सींचना है ! टहनियों को नहीं !

स्वामी जी में कितनी न निर्मानता व सरलता थी ! जहाँ सत्संग करते थे- वहाँ सर्व प्रथम 'आचार्य श्री' की बड़ी प्रतिमा रखवाते थे ! सर्व प्रथम उनको प्रणाम करके ही सब कार्य प्रारम्भ करते थे !

सन् १९९६ में स्वामी जी 'सिन्ध यात्रा' पर गए थे तो वही से भी **'आचार्य सतगुरु टेऊँराम जी महाराज'** के पावन जन्मस्थली **'खण्डु गाँव'** और श्री अमरापुर दरबार टण्डोआदम की **'पवित्र रज'** साथ लाए थे ! उस पवित्र रज को वर्तमान में श्री अमरापुर स्थान जयपुर के **'श्री मन्दिर'** में प्रेमियों के दर्शनार्थ हेतु रखा गया है !

स्वामी जी अपना सर्वस्व **'श्री गुरुदेव सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** को समर्पित कर स्वंय निष्कामी बन सभी सेवा कार्यों को किया करते थे और कहते थे- सब कार्य आचार्य श्री कर रहे है ! हम तो उनके दास व सेवक है !

हम सब भी **'आचार्य जी'** से यही प्रार्थना करे कि हम भी उनके दास बनकर **'श्री गुरु दरबार'** की तन - मन से सेवा, नाम - सुमरण, भक्ति - पूजा - पाठ आदि करके अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सके !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन..

मान अपमान से परे- संत महापुरुष

संत-महापुरुषों में अनेक गुण विद्यमान होते हैं ! उनके उत्सवों को मनाने का एक मात्र उद्देश्य यही होता है कि हम उनके जीवन में से कुछ गुण सीख सके ! उन पर चलने का प्रयास करे ! तभी हमारा उत्सव मनाना सार्थक व सफल होता हैं !

सेवा करना कोई सरल कार्य नहीं होता हैं- **'सबते सेवक धर्म कठोरा'** लेकिन **'स्वामी हरिदासराम जी महाराज'** मे सेवा भक्ति का गुण रोम-रोम में समाया हुआ था ! वे **'सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज'** की तन-मन-कर्म-वचन से खुब सेवा किया करते थे ! स्वंय उनके उठने से पहले उठ जाते थे और स्नान, भोजन, लेखन कार्य आदि उनकी सारी सेवा स्वयं ही किया करते थे ! उनके सोने के बाद ही सोते थे ! श्री गुरु दरबार के प्रति भी उनकी बहुत निष्ठा थी ! सेवा कार्यों से कभी पीछे नही हटते थे !

ऐसे ही एक समय श्री अमरापुर दरबार में **'गुरु पूर्णिमा'** के पावन अवसर पर सभी छोटे संतों को अपनी-अपनी सेवाएं दी गई ! सभी अपनी-अपनी सेवा करके स्वामी जी के पास आये ! तब स्वामी जी के पूछने पर सभी ने बतलाया सेवा पूरी हो गई !

तब स्वामी हरिदासराम जी महाराज स्वंय सब सेवा कार्य देखने गए ! सारी सेवाएं अच्छे से हो गई थी पर भूलवश बाथरूम

की साफ-सफाई नहीं हुई थी ! स्वामी जी ने किसी से कुछ ना कहकर स्वंय हाथ मे झाड़ू लेकर बाथरूम को साफ करने लगे ! छोटे विद्यार्थी संतों ने बहुत बार मना किया ! स्वामी जी ! हम अभी कर देते है ! हमसे भूल हो गयी ! हमे क्षमा कर दो ! हमने ध्यान नही दिया !

किन्तु स्वामी जी ने कहा- अरे भाई ! हमे भी सेवा करने दो! हम भी श्री गुरु दरबार के सेवादारी हैं ! तुम अपनी सेवा करो ! कितनी बड़ी बात हैं..? कहना तो बड़ा सरल होता है पर उस पर चलना बहुत कठिन होता है ! स्वामी जी मे कथनी व करनी दोंनो एक समान थी ! जो शिक्षा देते थे ! उसका अनुसरण भी करते थे !

ऐसा दृश्य देखकर हमारी आँखों से अश्रु धारा निकल पड़ी ! कितने बड़े गुरु गद्दी **'सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चतुर्थ पीठाधिश्वर'** और कहाँ ऐसा तुच्छ सेवा कार्य ..? हमे भी उनसे ऐसी सेवा करने की प्रेरणा लेनी चाहिए ! धन्य-धन्य है ऐसे संत-महापुरुष... !

कुछ समय हमें भी उन तपस्वी महापुरुषों का दर्शन, सेवा व सानिध्य प्राप्त हुआ ! ऐसे अनेक सेवा के मार्मिक प्रसंग हमें सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के जीवन मे देखने को मिले !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन....

महापुरुषों की सेवा भक्ति

सेवा भी भगवान की एक भक्ति है ! यह नवधा भक्ति का अंग है ! सेवा का गुण भी किसी-किसी मे ही होता है ! इन्ही सेवा कार्यो के अग्रणीय त्यागी महापुरुष **'सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज'** भी एक थे ! जिनमें अनेक गुणों के साथ सेवा का भी विशेष गुण था !

ऐसे ही एक बार हरिद्वार के श्री प्रेम प्रकाश आश्रम में हरिजन-माता, जो सफाई व कचरा लेके जाने का कार्य करती थी ! एक दिन वह कचरा लेकर जाने मे आना- कानी करने लगी ! मना कर रही थी कि मैं कचरा नही उठाऊंगी, जब तक आप मेरी तनख़्वाह नही बढ़ाएंगे..? वह ज्यादा पैसे मांगने लगी ! उसको प्रति माह काम के पूरे पैसे मिलते थे पर वह अभी ज्यादा पैसे मांगने लगी !

संतों ने समझाने की बहुत कोशिश की ! परन्तु वो नही मानी ! ऐसा शोर गुल सुनकर स्वामी हरिदासराम जी महाराज बाहर आये ! संतों ने सारी बात स्वामी जी को बताई !

स्वामी जी ने किसी से कुछ भी ना कहकर स्वयं कचरे की गाड़ी ले जाकर बाहर फेंकने निकल पड़े ! सभी संत कहने लगे- स्वामी जी ! आप ये कार्य न करे ! हम कर लेंगे ! हम इसे समझा रहे है !

तब स्वामी जी ने कहा - हमें भी श्री गुरु दरबार (आश्रम) की सेवा करने दो ! हम भी **'गुरुदेव साईं टेऊँराम जी महाराज'** के सेवादारी है ! आप सभी अपनी-अपनी सेवा करो !

इतनी बड़ी पदवी पर होते हुए भी किसी से कुछ ना कहकर वह स्वयं **'गुरु दरबार'** की सेवा में सदैव सलग्न रहते थे ! जब ऐसा दृश्य देखते है तो स्वयं ही मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है ! धन्य-धन्य है- ऐसे कर्मयोगी संत-महापुरुष !

हमारा भी परम् सौभाग्य है कि - हमें कुछ समय उन महापुरुषों का दर्शन, सत्संग, सेवा और सानिध्य का लाभ प्राप्त हुआ !

हमें भी उनके जीवन से ऐसी प्रेरणाप्रद शिक्षा लेनी चाहिए और उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए ! तभी हमारा जीवन धन्य-धन्य होगा !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन....

सेवा में तत्पर रहे, कबहूँ चूकत नाहिं ।
स्वामी के मन भावहीं, सेवक मानो ताहिं ।।

श्री गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव

मर्यादामूर्ति सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज अपनी मान- प्रतिष्ठा आदि से एकदम दूर रहते थे ! कभी भी अपने आप को बड़ा नही मानते थे !

एक बार संतो ने निवेदन किया कि स्वामी जी इस वर्ष **'प्रेम प्रकाश सन्देश'** विशेषांक (मासिक पत्रिका) के आवरण पृष्ठ पर आपका फोटो प्रकाशित किया जाये ??

इस पर स्वामी जी ने थोड़ा गुस्सा करके तुरंत जवाब दिया- खबरदार ! हमारे फोटो को कभी भी 'पत्रिका' में नहीं छापना ! यदि हमारी प्रसन्नता चाहते हो तो मात्र **'युगपुरुष आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** का ही चित्र प्रकाशित करें ! हमारा कभी भी नहीं छापें ! उनका ही गुनगान व यशोगान करना है ! उनका चित्र व उनकी महिमा होनी चाहिए ! ना कि हमारी ! हम तो श्री गुरुदेव जी के सेवक है ! कितनी न निष्ठा थी- स्वामी जी की श्री गुरुदेव भगवान के प्रति !

स्वामी जी इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि कहीं हमारी मान-प्रतिष्ठा के आगे **'आचार्य जी'** की प्रतिष्ठा में कमी न आ जाये ! लोग हमारी जय-जयकार न करने लग जाये !

सभी से सत्संग के खुले मंच से यही आवाहन करते थे कि

हमें मात्र 'आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' को ही अधिक महत्व देना है ! **'आचार्य श्री'** की पूजा-अर्चना करने से सभी प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों की पूजा स्वतः ही हो जाती है ! अतः हमें **'आचार्य श्री'** की मूर्ति- मंत्र (सतनाम साक्षी), ध्यान, सुमिरन सब कुछ उन्ही का ही करना चाहिए ! यही सबसे बड़ी गुरु भक्ति है !

भक्तों को नाम दान की दीक्षा देने पर मूर्ति भी **'आचार्य श्री'** की देते थे ! कहते थे-इन्ही का ही ध्यान- पूजा-अर्चना करनी है !

ऐसे थे **'आचार्य श्री'** के परम भक्त व उपासक सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ! धन्य-धन्य है- ऐसे महापुरुष ।

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन...

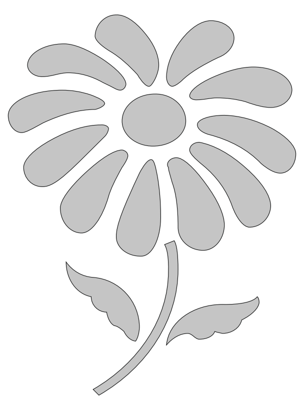

हमें भी यात्रा करनी है

एक समय सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे ! पलंग का आधे से भी ज्यादा हिस्सा पुस्तकों, पत्रों आदि से भरा हुआ था ! पलंग के दूसरे छोटे से हिस्से पर स्वामी जी शयन कर रहे थे !

इस प्रकार शयन करते हुए देखकर एक प्रेमी ने स्वामी जी से कहा-स्वामी जी ! आप प्रायः ऐसे आधे हिस्से पर क्यों शयन करते हैं ? इतने छोटे से स्थान पर सोने में क्या आपको कोई तकलीफ-परेशानी नहीं होती..?

स्वामी जी ने बड़ा सुन्दर वचन कहा- भाई ! **हम तो सदैव 'रेल यात्री' की भांति यात्री ही हैं** ! जैसे रेल में एक लम्बी (आधी) सीट रहती हैं ! वहां घर जैसा डबल बैड थोड़ी ना होता है..? यात्री भी यही सोचता है कि हमें तो एक रात यात्रा करनी है ! बाकी पुनः अपने स्टेशन पर उतरना है ! वैसे ही हमें भी सदैव इस संसार में **'रेल की तरह यात्रा'** करनी है ! थोड़ा समय यहाँ रहना है ! हम सब मुसाफिर है !

इसी बात को हमेशा स्मरण करके चलना चाहिए ! यदि ऐसा करके चलेंगे तो कभी भी दुःखी नहीं रहेंगे ! आसक्ति नही होगी !

सदैव प्रसन्नचित रहेंगे ! अपने आप को सैलानी समझना चाहिए ! महापुरुषों की छोटी- छोटी बातों में भी बड़ा अद्भुत ज्ञान भरा होता है ! उसे समझने का प्रयास करना चाहिए ! जिससे हमारा कल्याण होता है !

धन्य-धन्य है - ऐसे परम वैरागी त्यागी महापुरुष जिनका हमे दर्शन व सानिध्य प्राप्त हुआ !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि- कोटि वन्दन...-

धर्मशाला जान जग को,
जीव सब महिमान है ।
मोह किस से न करो,
सब स्वप्न का सामान है ।।

समय के पाबंद संत - महापुरुष

सतगुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज में ऐसे तो अनेक गुण विद्यमान थे ! उन्ही गुणों में समय की पाबंदी का एक विशेष गुण भी था !

स्वामी जी समय के बड़े पाबंद थे ! जिस काम का जो समय निर्धारित होता था ! वह काम उसी समय में करते थे ! सत्संग भी समय से ही समाप्त करते थे, चाहें कितना भी बड़ा आयोजन क्यों न हो !

आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गादी के चतुर्थ पीठाधिश्वर थे ! इसलिए वह अनेक कार्यक्रमों में सदा व्यस्त भी रहते थे ! इतनी व्यस्तता के बाद भी कार्य सदैव निर्धारित समय पर ही किया करते थे !

सिन्धी समाज का मुख्य त्योहार - पर्व - जो 'चेटीचंड' है ! वह गुलाबी नगरी जयपुर में भी बड़े धूम-धाम के साथ मनाया जाता हैं !

ऐसे ही एक बार सिन्धी समाज के मुख्य आयोजकों ने चेटीचंड के उपलक्ष पर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज को उत्सव के शुभारम्भ पर '**दीप प्रज्वलन**' का निवेदन किया ! स्वामी जी ने उनके आग्रह को सहर्ष स्वीकार किया ! क्योंकि '**भगवान श्री झूलेलाल जयंती**' का पावन पर्व था !

कार्यक्रम की पूरी तैयारियाँ हो गई थी ! कुछ गणमान्य लोग

भी आ गए थे ! स्वामी जी भी निर्धारित समय पर आ गए थे ! उन्होंने स्वामी जी का स्वागत-सत्कार किया !

स्वामी जी ने उनको दीप प्रज्वलन का कार्यक्रम शुरू करने को कहा- उन्होंने कहा- स्वामी जी ! अभी कुछ मंत्रीगण नहीं आए हैं ! थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा ! पर स्वामी जी समय के बड़े पाबंद थे !

स्वामी जी ने कहा - कोई बात नहीं ! चाहे कोई आए - चाहे ना आए ! **हमे तो कार्य निर्धारित समय पर ही करना है** ! इतनी निडरता ! इतना साहस ! हर कोई संत - महापुरुष ऐसा साहस नही कर सकता ! बस- फिर क्या..!

निडरता के साथ स्वामी जी ने मोमबत्ती ली और संतो के साथ मंत्र पढ़कर **'दीप प्रज्वलित'** कर दिया ! किसी की प्रतिक्षा नही की और फिर स्वामी जी संतो के साथ वापस श्री अमरापुर दरबार आ गए !

स्वामी जी सदैव अपनी बात पर कायम रहते थे ! वे अपने जीवन में सदैव निर्भय रहते थे ! निष्कामता- निर्भीकता- निर्मानता- स्वाबलम्बी, समय के पाबन्द आदि ये सब गुण स्वामी जी के आभूषण थे ! ऐसे साहसी - निर्भीक महापुरुष के दर्शन व सानिध्य प्राप्त कर हम भी धन्य-धन्य हुए है !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि - कोटि वन्दन....

निड़र व निर्भीक महापुरुष

सिन्धी भाषा को लुप्त होता देखकर **'सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज'** सदैव सबको उपदेश दिया करते थे कि **सिन्धी हमारी मातृभाषा** है ! आपस मे हमेशा सिन्धी मे बोले ! अपने बच्चों से भी सिन्धी में बात करे ! सिन्धी समाज का गौरव बढ़ाए !

ऐसे ही एक बार ग्वालियर के **'सिन्धु आदर्श बाल मंदिर'** में सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज को विद्यालय में आने के लिए निवेदन किया गया ! जिससे बालकों को अपने समाज के संतों- महापुरुषों के बारे जानकारी मिले और उनके प्रति श्रद्धा-विश्वास का संस्कार जागे ! उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो सके ! स्वामी जी ने उनका निवेदन सहर्ष स्वीकार किया !

अगले दिन स्वामी जी कुछ संतों के साथ वहाँ पधारे ! स्वामी जी का यथा योग्य स्वागत-सत्कार किया गया ! फिर संस्थापक ने विद्यालय द्वारा क्या-क्या कार्य किये जाते है ! वह सब सविस्तार वर्णन किया ! स्वामी जी सारी बात ध्यान से सुन रहे थे !

अब स्वामी जी से दो आशीर्वचन की प्रार्थना की गयी ! तब सर्वप्रथम स्वामी जी ने गंभीर वाणी में पूछा..? विद्यालय में कितने बच्चे सिन्धी हैं..? अध्यापकों ने कहा-लगभग 90 प्रतिशत ! फिर स्वामी जी ने कहा- जब बच्चे सिन्धी हैं तो फिर आपने पूरा भाषण हिन्दी में क्यूँ दिया.? जब आप ही **'सिन्धी भाषा'** को महत्व नहीं

दोगे तो फिर बच्चों को क्या संस्कार दोगे..? कैसे हमारी सिंधी बोली बचेगी..?

ऐसा सुनकर पूरी सभा में सन्नाटा छा गया ! कोई भी जवाब नहीं दे सका ! फिर स्वामी जी ने कहा- हम सब सिन्धी हैं ! फिर भी सिंधी नही बोलते ! स्वामी जी ने पुनः सभी से पूछा- हमारे घरों में कितने माँ-बाप ऐसे हैं, जो बच्चों से सिन्धी में बात करते हैं...? सब माँ-बाप बच्चों की ओर निहारने लगे ! सभी चुपचाप व शान्त हो गए ! एक-दो बच्चों को खड़ा करके पूछा- बेटा ! **हमारे इष्टदेव भगवान** कौन है..? कोई जवाब नहीं दे पाया ! फिर अध्यापकों की ओर देखने लगे ! सब चुप थे ! स्वामी जी ने खुद ही जवाब दिया ! **''भगवान श्री झूलेलाल जी'' !**

सभी आपस में बात करने लगे ! लेकिन स्वामी जी ने सभी के मन की बात जान ली ! हमारा आदर-सम्मान ही सब कुछ नही ! जो समाज की बुराइयों को छूपा सके ! जो सच है वो कहने में भय कैसा.. ? स्वामी जी ने कहा- हमनें अपनी मिट्टी की खुशबू अपने बच्चों में नहीं भरी ! अपनी सिंधी मातृ भाषा खो दी !

स्वामी जी ने निर्भय व निडर होकर सारी सच्चाई मंच पर बयान कर दी ! स्वामी जी अपनी सिन्धी भाषा को कायम रखना चाहते थे और कभी किसी से भयभीत नही होते थे ! जो सच्चाई होती थी वो सबके सामने बोल देते थे !

धन्य-धन्य है-ऐसे निड़र, निर्भीक संत-महापुरुष...! जो सभी को जगाने का प्रयास करते है !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि कोटि वन्दन..

काले वस्त्र नहीं पहनने चाहिए

एक दिन सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज- श्री अमरापुर दरबार पर अपने कमरे में बैठे थे ! सिंध की तीन बहनें स्वामी जी का दर्शन करने आई ! तीनों ने काले रंग के कपड़े पहने थे ! वह स्वामी जी से वार्तालाप कर रही थी ! स्वामी जी बार- बार उनके काले कपड़ों को देख रहे थे ! स्वामी जी ने उनसे पूछा- तुम तीनों ने काले कपड़े क्यों पहने हैं..? कोई खास बात हैं.. ?

उन्होंने कहा- आजकल सिंध में काले कपड़ों का बड़ा फैशन चल रहा है ! तो हम तीनों ने भी ये कपड़े बनवाए थे कि भारत में भी यही कपड़े पहनेंगे !

स्वामी जी ने कहा-बेटी ! **काला रंग अशुभ और तामसी** माना जाता है ! विचार भी बुरे आते है ! माताओं और कन्याओं को तो खास करके काले कपड़े कभी भी नहीं पहनने चाहिए ! इससे हमारे खान- पान, रहन-सहन और मन पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है ! ये सुनकर तीनो बहने लज्जित हो गयी और बोली- स्वामी जी- हमें इन बातों का पता नहीं था !

तब स्वामी जी बोले-कोई बात नहीं- बेटा ! आगे से ध्यान रखना ! काले वस्त्र नही पहनने चाहिए ! हमे अपनी सनातन संस्कृति व रीति रिवाजों के अनुसार चलना चाहिए !

थोड़ी देर बाद तीनों बहनें स्वामी जी के पास आई और

कहा- हमनें मन में फैसला किया है कि हमारे गुरु बाबा जी को- जो बात पसंद नही हो, वो काम हम नही करेंगे ! आगे से हम काले कपड़े नहीं पहनेंगे ! दुसरो को भी मना करेंगे ! यह बात सुनकर स्वामी जी बड़े प्रसन्न हुए ! उन्हें आर्शीवाद दिया साथ ही उपहार भी दिया ! महापुरुषों की वाणी में अद्भुत प्रभाव होता है !

अतः माताओं- बहनों को कभी भी **'काले वस्त्र'** नहीं पहनने चाहिए ! इसका मन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है !

ऐसे थे हिन्दू सनातन धर्म के रक्षक व समाज सुधारक सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ! धन्य-धन्य है संत महापुरुष !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि कोटि वन्दन..

सो जाता है हर कोई, अपने कल के लिए ।
जागता है मेरा सत्गुरु, सबके हल के लिए ।।

महापुरुषों की निर्मानता

एक समय कुछ भक्त व संतों को साथ लेकर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज **'गंगा सागर धाम'** में पहुंचे ! वहाँ सभी संतों के साथ स्वामी जी ने पहले मां गंगा जी को प्रणाम किया और फिर स्नान आदि करके बाहर आ गए !

स्वामी जी ने भक्त व संतों को स्नान आदि करके आने की आज्ञा दी ! संतजन कहने लगे-स्वामी जी ! कोई एक प्रेमी यहां रुक जाए जो कपड़े जूते आदि की सुरक्षा कर सके ! तब स्वामी जी ने कहा तुम सामान, कपड़े, जूते आदि की चिंता मत करो ! मैं ध्यान रखूँगा ! सभी ने बहुत आग्रह किया पर निर्मानी स्वामी जी ने सबको प्यार से समझाकर भेज दिया !

हम सब इस बात से अनजान थे कि सागर की लहरें बडी दूर-दूर तक जाती है ! फिर हम सभी अपने कपड़े, जूते आदि वहाँ रखकर स्नान करने के लिए चले गए !

थोड़ी ही देर में अचानक एक बड़ी सी लहर हमारे सामान की ओर बड़ी... इतना जल्दी हम कुछ समझ पाते या भागकर सामान हटाते ! उससे पहले झट से स्वामी जी उठे और **हमारे सामान, कपड़े..और तो और जूते-चप्पल तक भी उठाकर सुरक्षित** स्थान पर रख दिए ! यह देखकर हमें अपने ऊपर ग्लानि

महसूस हुई ! इतने बड़े ऊँचे पद पर बैठे महापुरुष और ऐसा तुच्छ कार्य ! बड़ा कठिन ही होता है पर स्वामी जी में निर्मानता थी ! कोई पद का अभिमान नही था !

जब हम सभी ने यह दृश्य देखा तो मन ही मन लज्जित हो रहें थे ! आँखों से सजल अश्रु धारा निकल रही थी ! इतने बड़े महामण्डलेश्वर ! आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गद्दीनशीन ! ऋद्धि-सिद्धी के मालिक ! इतने बड़े विद्वान ! ब्रह्मज्ञानी ! और इतनी निर्मानता ! हमे भी ऐसा आर्शीवाद प्रदान करें ! जिससे कि हम भी ऐसे गुणग्राही बन सके ! जिससे हमारा कल्याण हो सके !

ऐसे निर्मानता के अवतारी महापुरुष धन्य-धन्य है !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि कोटि वन्दन..

बड़े बढ़ाई न करे, बड़े न बोले बोल ।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका तेरा मोल ।।

संसार की माया से निर्लिप्त महापुरुष

एक बार सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज नागपुर में एक माता के घर भोजन करने गये थे ! भोजन के पश्चात् उस माता ने स्वामी जी को ५०००० रूपये भेंट में दिए ! स्वामी जी ने माता से भेंट में इतने सारे रूपये देने का कारण पूछा-

माता ने कहा- मैंने जयपुर फोन पर आपसे प्रार्थना की थी ! मेरी तबियत बहुत खराब है ! डॉक्टरों ने ऑपरेशन के लिए कहा है! जिस पर बहुत खर्चा आएगा ! कृपया आप पल्लव पाकर आशीर्वाद प्रदान करना ताकि मेरा स्वास्थ्य ठीक हो जाए ! तब आपने कहा- श्री गुरु महाराज सब अच्छा करेंगे ! जल्दी ठीक हो जाओगे ! कोई चिन्ता न करें ! उस बिमारी का ऑपरेशन के अलावा कोई ईलाज नहीं था ! वो आपके आशीर्वाद से बिना ऑपरेशन के मैं ठीक हो गई ! कोई तकलीफ भी नही हुई ! जो खर्चा डॉक्टरो पर आता ! वह मेरा बच गया ! इसलिए मैं यह तुच्छ भेंट आपके श्री चरणों में रख रही हूँ ! कृपया इस भेंट को आप स्वीकार करें और मुझे आशीर्वाद दे कि मैं हमेशा ठीक रहूँ ! श्री गुरु दरबार की सेवा करती रहूँ !

माता के वचन सुनकर स्वामी जी ने पैसों का बण्डल माता को वापस किया ! स्वामी जी ने उसमे से मात्र **'एक रूपया'** ही

लिया और कहा – मैंने आपकी दी हुई भेंट स्वीकार कर ली ! इससे अधिक मैं नहीं ले सकता ! आप पहले से ही आर्थिक तकलीफ में है ! मैं आपकी तकलीफ को और अधिक नहीं बड़ा सकता !

इतना कहकर स्वामी जी ने सारे **'रूपये-पैसे'** माता को वापस कर दिए !

ऐसे संसार की माया से निर्लिप्त महापुरुष धन्य-धन्य है ! जिन्हें संसार के धन-दौलत **'पैसों-रुपयों'** की तनिक भी इच्छा नही ! इसी प्रकार संत महापुरुष अपनी कृपा दृष्टि से अनेक भक्तो के दुःख-दर्द दूर कर देते है !

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन.

कभी भी गुरु को मत बताओं,
कि मेरी मुश्किल कितनी बड़ी है।
हमेशा मुश्किलों को बताओं,
कि मेरा 'गुरुदेव' कितना बड़ा है।।

अन्तर्यामी संत महापुरुष

यह बात जयपुर चैत्र मेले की है ! सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के निकट जितने प्रेमी-सेवादारी थे ! वे सेवा से निवृत होकर स्वामी जी दर्शन व मिलने के लिये कमरे में जातें थे !

एक बहन भी मेले की सेवा से निवृत होकर, जब उसे स्वामी जी के कमरे में जाने का सौभाग्य मिलता था तो वह स्वामी जी की सेवा व दर्शन करने जाती थी !

एक दिन स्वामी जी ने उसे और सभी प्रेमियों को साथ ही बैठाकर भोजन खाने की आज्ञा दी ! सभी बड़े प्रसन्न हुए.. पर उस बहन को भोजन के बाद सुपारी खाने की आदत थी ! उस दिन उसे आश्रम के आस-पास सुपारी नहीं मिली थी, तो उसने सोचा - आज में भोजन के पश्चात् स्वामी जी से इलाइची माँग लूंगी !

भोजन के पश्चात् जब वह बहन स्वामी जी के पास गई तो यह देखकर आश्चर्य चकित हो गई कि स्वामी जी के हाथ में इलाइची की माला पड़ी थी ! माला उसे देते हुए स्वामी जी ने कहा - बेटी ! **ये लो इलाइची.. ! इसे खा लो ! सुपारी नहीं खाया करो !** सुपारी खाना अच्छा नहीं होता है ! यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ !

स्वामी जी उसके मन की बात कैसे जान गए और उनके करुणामयी वचन सुनकर उसकी आँखों में से आँसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे ! नेत्र सजल हो गए ! उस बहन ने स्वामी जी के चरण पकड़ लिये और क्षमा मांगते हुए स्वामी जी से कहा - प्रभु ! आज के बाद मैं कभी भी सुपारी नही खाऊँगी !

ऐसे थे - दुर्लभ अन्तर्मन की बात जान लेने वाले त्यागी-वैरागी सत्पुरुष सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज... !

धन्य - धन्य है ऐसे संत महापुरुष ! जो जीवों का कल्याण करने के लिये इस धरा धाम पर अवतार लेकर आते है... !

दयालू नाम है तेरा,
दया की हड़ताल न करना ।
मेरे पापों की ऐ गुरुवर,
कभी पड़ताल न करना ।।

संत महापुरुष का दिव्य दर्शन

महापुरुषों में अनेक गुण होते है ! विशेष संत मिलन ! एक दुसरे से मिलकर बड़े प्रसन्न होते है ! मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का संतों के प्रति अगाध प्रेम था ! स्वामी जी सभी संत-महात्माओं से बड़े स्नेह - भाव से मिलते थे !

एक बार स्वामी हरिदासराम जी महाराज ग्वालियर और मुरैना की यात्रा पर थे ! किसी प्रेमी ने बताया बीच में एक गाँव **'करैह'** पड़ता है ! वहाँ बड़े ही भक्ति प्रधान, वैराग्य, ममता की सोम्य मूर्ति वयोवृद्ध **'करैह वाले बाबा'** के नाम से मशहूर संत रहते है !

स्वामी जी को जब पता चला तो बस- तुरन्त ही उनके दर्शनों का कार्यक्रम बनाया ! कुछ संत- प्रेमियों के साथ उनके दर्शनों के लिए निकल पड़े ! उनके छोटे से कमरे में जाकर स्वंय ही पहले सादर प्रणाम कर गले मिले ! वो दिव्य दर्शन भी कुछ अलौकिक ही था ! दो अथाह समुन्द्रों (महापुरुषों) का मिलन ! उस समय स्वामी जी की निर्मानता देखो - धरती पर चटाई बिछी हुई थी ! वहाँ शांतचित होकर चुपचाप बैठ गये ! किसी से कुछ नही कहा ! सभी ने स्वामी जी को ऊपर बैठने के लिये प्रार्थना की ! किन्तु इशारे से सबको चुप करा दिया ! कितनी न निर्मानता !

'वयोवृद्ध करैह वाले बाबा जी' को थोड़ा कम दिखाई देता था और बीमार होने के बावजूद भी गद्-गद् भाव से स्वामी जी से बोलने की कोशिश कर रहे थे !

संत संत के प्राण है, संत संत पर ध्यान ।

सबके प्यारे संत है, करते सबका मान ।।

यह अलौकिक दृश्य हम सब प्रेमी-संत काफी देर से ही देख रहे थे ! उनकी आवाज बहुत धीमी निकल रही थी ! कुछ दोहे कह रहे थे ! फिर स्वामी जी से दो वचन कहने को कहा- तब स्वामी जी ने संतों को भजन गाने की आज्ञा दी !

इसी प्रकार कुछ समय आपस मे संतो से ज्ञान चर्चा कर स्वामी जी ने उन्हें **'युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** द्वारा रचित **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ'** भेंट किया ! उन्होंने ग्रन्थ स्वीकार कर मस्तक पर लगाया ! दोनों महापुरुष एक दूसरे से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए ! ऐसा दृश्य देखकर सभी भाव विभोर हो गए ! सभी संत-भक्तो का परम सौभाग्य रहा, जो ऐसे संतो का दर्शन प्राप्त हुआ ! धन्य-धन्य है- ऐसे मिलनसार दिव्य संत-महापुरुष....

'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' में हमारा कोटि-कोटि वन्दन..

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)